कला स्नातक उपाधि कार्यक्रम **(FYUP/CBCS)**

संस्कृत (**BAFSK/BASKH**)

पाठ्यक्रम –भारतीय ज्ञान परंपरा

पाठ्यक्रम कोड – **BSKAE-181**

(**Minor**)

सत्रीय कार्य

(**First Semester**)

जनवरी 2025 एवं जुलाई 2025 सत्रों के लिए

मानविकी विद्यापीठ

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

पाठ्यक्रम –भारतीय ज्ञान परंपरा

सत्रीय कार्य – जनवरी 2025 एवं जुलाई 2025
कार्यक्रम कोड : **BAFSK (FYUP/CBCS)**
पाठ्यक्रम कोड : **BSKAE-181/2025-2026**

प्रिय छात्र/छात्राओं,
यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (**TMA**) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :
1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए।
2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है

अनुक्रमांक : .....
नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....
सत्रीय कार्य कोड : .....
अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....
दिनाँक : .....

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ

जनवरी 2025 सत्र के लिए : 30 सितम्बर 2025
जुलाई 2025 सत्र के लिए : 31 मार्च 2026

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास :** उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

(क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

(ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

(ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

कला स्नातक उपाधि कार्यक्रम (FYUP/CBCS)

पाठ्यक्रम –भारतीय ज्ञान परंपरा

सत्रीय कार्य : जनवरी 2025 एवं जुलाई 2025

पाठ्यक्रम कोड – BSKAE-181
पाठ्यक्रम शीर्षक – भारतीय ज्ञान परंपरा
सत्रीय कार्य – BSKAE-181/TMA/2025-2026

पूर्णांक – 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

1. अधोलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :– **15x4=60**

क .'ब्राह्मण' शब्द के अर्थ को बताते हुए सामवेदीय ब्राह्मणों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालिए।

ख. उपनिषद् शब्दार्थ का विचार करते हुए उनका रचनाकाल एवं प्रतिपाद्य विषयों को विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिए।

ग. सप्तांग सिद्धांत को स्पष्ट करते हुए उसके प्रत्येक अवयव की कार्यपद्धति को स्पष्ट कीजिए।

घ. प्राचीन न्याय व्यवस्था पर निबन्ध लिखिए।

ड. धर्मशास्त्र का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसकी विषय–वस्तु पर प्रकाश डालिए।

च. भारतीय समाज में संस्कारों की आवश्यकता और उनके प्रयोजन पर प्रकाश डालिए।

छ. बौद्ध आयुर्विज्ञान के आधार पर प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति की विवेचना कीजिए।

ज. बौद्धकालीन मनोविज्ञान का विस्तारपूर्वक वर्णक कीजिए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **5x4=20**

क. ब्राह्मण ग्रन्थों के महत्व पर विस्तारपूर्वक लिखिए।

ख. अथर्ववेद् के उपनिषदों का उसकी विषय–वस्तु सहित वर्ण कीजिए।

ग. वेदकालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक संरचना में क्या–क्या परिवर्तन हुआ, उसकी विवेचना कीजिए।

ड. शुक्रनीति के अनुसार सप्तांग सिद्धान्त को स्पष्ट कीजिए।

च. प्राचीन काल में न्याय व्यवसाी का संचालन कैसे होता था? कौटिल्य ने प्राचीन न्याय व्यवस्था को कैसे संचालित किया? स्पष्ट कीजिए।

छ. भारतीय सामाजिक संस्थाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

झ. बौद्ध साहित्य में वर्णित विज्ञान का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

ञ. बौद्धकालीन मूर्तिकला का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए – **10x2=20**

क. वेदांग

ख. राजकीय न्यायलय

ग. संस्कारों का स्वरूप

घ. शिल्पकला / मूर्तिकला